पाठ्यक्रम का क्षेत्र (Scope of curriculum) →

पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाने वाले ज्ञान का स्वरूप एवं विस्तार अनिवार्य रूप से सम्बंधित समाज द्वारा मान्य शैक्षिक उद्देश्यों पर निर्भर करता है। इसीलिए देश एवं काल की भिन्नता के अनुसार वहाँ के पाठ्यक्रमों में भिन्नता पायी जाती है। वैदिक काल में भारतीय शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य ईश्वर भक्ति एवं धार्मिक भावना को दृढ़ करना, बालकों का चरित्र निर्माण करना एवं उनके व्यक्तित्व का विकास करना तथा सामाजिक कुशलता में वृद्धि करना था। इस दृष्टि से उस समय का पाठ्यक्रम भी अत्यन्त विस्तृत था। उसमें परा विद्या अर्थात् धार्मिक साहित्य का अध्ययन तथा अपरा विद्या अर्थात् लौकिक एवं सांसारिक ज्ञान दोनों का ही समावेश था। उस समय शिक्षा कार्य गुरुकुलों में होता था। तथा शिक्षार्थी अपने शिक्षाकाल में गुरुकुल या गुरु-परिवार के सदस्यों के रूप में रहता था। वह गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के साथ-2 गुरु एवं गुरु पत्नी की सेवा, आश्रम की सफाई, पशुओं की देखभाल, तथा भिक्षाटन के माध्यम से कर्तव्यपालन, सेवाभाव, विनयशीलता तथा अन्य

A man can succeed at almost anything for which he has unlimited enthusiasm.

Scanned with DocScan

चारित्रिक गुणों की भी शिक्षा प्राप्त करता था। कभी-कभी शिक्षा प्राप्त करने हेतु शिष्यों को देशाटन पर भी जाना पड़ता था। इस प्रकार वैदिक कालीन पाठ्यक्रम में पठन-पाठन के साथ-2 विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के समुचित अवसर भी प्राप्त होते थे तथा उसका सम्पादन भी अध्ययन कक्षों और समय के घण्टों में सीमित नहीं था।

यूरोप के इतिहास का अध्ययन करें तो वहाँ के पाठ्यक्रम के सीमा क्षेत्र का आभास मिलता है। प्राचीन यूनान के नगर राज्य स्पार्टा को प्रायः युद्धरत रहना पड़ता था, अतः वहाँ पर बालकों के शारीरिक विकास एवं शस्त्र विद्या पर अधिक ध्यान दिया जाता रहा, जबकि एथेन्स नगर राज्य में शान्ति एवं स्थायित्व होने से वहाँ पर साहित्य, दर्शन एवं ललित कलाओं को अधिक महत्व दिया जाता था। प्रारम्भ में यूरोप एवं अमेरिका में भी शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को पढ़ने लिखने एवं सामान्य गणना कर सकने के योग्य बना देना मात्र था। अतः उस समय पाठ्यक्रम भी 3R तक सीमित था। यह स्थिति एक लम्बी अवधि तक बनी भी रही, क्योंकि पाश्चात्य देशों में भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत उन्हीं प्रवृत्तियों का समावेश किया जाता रहा जो कक्षा के अन्दर पाठ पढ़ाते समय आयोजित की जाती थी। कालान्तर में भारत में भी अनेक राजनीतिक कारणों से पाठ्यक्रम का रूप पश्चिमी देशों जैसा ही हो गया तथा गुरुकुलों एवं अक्षरों के स्थान पर पाठशालाओं का उदय हुआ जिनका कार्य केवल पढ़ने-पढ़ाने तक ही सीमित रह गया।

Minutes are worth more money, spend them wisely.

Scanned with DocScan